

साकेत विहारी आए साकेत विहारी ।  
 महाराज फूली तेरी सुखनि फुलवाड़ी ॥  
 चौथे पन मांह राजा भाग तेरे जागे  
 निराशा तिमिर तेरे राज्य से भागे  
 दशरथ को लालु भयो गाएं नर नारी ॥  
 अमरपुरी से आज अयोध्या अनूप भई  
 विधि की न सृष्टि ऐसी अचरज रूप मई  
 फूले तरु बेली भई बसंत बहारी ॥  
 नौमी तिथि मधु मास मंगल विधान हैं  
 कौशल्या की गोद आए पूर्ण भगवान हैं  
 और अवतारन के राम अवतारी ॥  
 श्रुति सेतुपाल हरी धर्म धुरीन हैं  
 कमल कोमल प्रभू नीरद नवीन हैं  
 दुष्टों के दमन हेतु धनु बाण धारी ॥  
 गावत वधाई आए अवध के नारी नर  
 नाचत गावत नभ किन्नर और विद्या धर

बीचि बीचि जै जै की कोकिल किलकारी ॥